JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक भारत में गाँधी जी की आर्थिक विचारधारा

डॉ. शीला कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
बी. पी. एस. आई एच. एल., बी.पी.एस.एम.वी., खानपुर कला, सोनीपत

सार :

प्रस्तुत शोध पत्र में भारत की अर्थव्यवस्था के बारे में महात्मा-गांधी जी की मौलिक सोच को दर्शाया गया है। यह सोच उस समय प्रचलित विचारों की परवाह न कर स्पष्ट रूप से ऐसी नीतियों की मांग करती थी जो गरीब को राहत मिले। इसके साथ इन्होनें ऐसे सिद्वांत अपनाने को कहा जिनसे दुनिया में तनाव व हिंसा दूर हो तथा पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे। उन्होनें शोषण विहीन व्यवस्था की मांग रखी ताकी सभी की बुनियादी जरूरते पूरी हा सके।

परिचयः

मोहनदास करमचन्द गाँधी –

मोहनदास करमचन्द गाँधी का जन्म एक ऐसे समय में हुआ जबकि राष्ट्रीय आन्दोलन शक्ति प्राप्त कर रहा था। परन्तु गाँधी जी ने उसकी कार्यशैली को ही बदल दिया। यह वह समय था जब भारतीय विद्वानों को अंग्रेजी न्याय व्यवस्था में पूर्ण विश्वास था। ब्रिटिश शासन से लोगों में निडरता का अभाव था और वे इस शासन से भयभीत थे। तिलक के इस वाक्य ने भी कि ''स्वराज्य हमारा जन्म सिद्व अधिकार है'', लोगो के हृदय में जोश उत्पन्न नहीं किया तथा यह गाँधी जी ही ने जिन्होनें व्यक्तियों के डर को दूर करके उनमें जोश उत्पन्न किया। उस समय गाँधी जी सोचते थे कि अंग्रेजों की न्याय प्रणाली उचित है और बताने से ही भारत को ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत समानता का अधिकार प्राप्त हो जायेगा। परन्तु रॉलर एक्ट और जलियावाला बाग जैसी घटनाओं से हमारे नेताओं के विश्वास को गहरा धक्का लगा।

इस घटनाओं ने हमारे आन्दोलन की कार्यशैली को बदल दिया तथा भारतीय नेता रियायतों के स्थान पर पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग करने लगे। गाँधी जी ने अहिंसा का रास्ता अपनाया। सन् 1947 में गाँधी जी द्वारा बनाई गई कार्यशैली नये सिद्वान्तों तथा नये आर्दशों के परिणामस्वरूप भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। सन् 1920 से 1948 तक के काल को गाँधी युग कहना अनुचित नहीं होगा।

गाँधी जी की जीवनी –

मोहनदास करमचन्द गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबन्दर में हुआ था। सन् 1887 ई0 में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड गये। 1891 ई0 में उन्होनें वकालत करनी शुरू कर दी। सन् 1893 से 1914 तक गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका में जातीय भेदभाव समाप्त करने के लिए कार्य करते रहे। गाँधी जी के सत्याग्रह से दक्षिणी अफ्रीका में भी गाँधी जी की प्रंशसा उत्पन्न हो गई। सन् 1915 में गाँधी जी भारत आए और 1920 में उन्होनें असहयोग आन्दोलन आरम्भ कर दिया। सन् 1930 में दाण्डी मार्च का नेतृत्व किया तथा नमक सत्याग्रह किया। सन् 1940 में उन्होनें (Civil Disobidiance) ''सिविल डिसओबीडियन्स मूवमेन्ट तथा सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन आरम्भ किया। 30 जनवरी 1948 को गोली लगने के कारण गाँधी जी की मृत्यु हो गई।

महात्मा गाँधी जी ने टालस्टाय (Tolstoy) और थोरी (Thoreau) से समानतावाद, सरलता एवं वैराग्य सम्बन्धी विचार प्राप्त किये। राजनैतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण करना इस प्रकार के विचार उन्हे युवराज क्रोपाटनिक से प्राप्त हुए महात्मा गाँधी जी के विचार गीता तथा उपनिषदों से भी ओत-प्रोत थे। हिन्दु साधुओं तथा नानक के विचारों से भी प्रभावित हुए। राजनीतिक क्षेत्र में वे गोखले के शिष्य बने।

महात्मा गाँधी जी के आर्थिक विचारों पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई। गाँधी जी की इन पुस्तकों तथा रचनाओं के माध्यम से हमें उनके आर्थिक विचारों का पता चलता हैं जो निम्नलिखित है।

"The constructive Programme, "The Economics of Khadi", "Hindi Swaraj," 'Sarvodaya', "Towards Non-Violent Socialism" और अनेक लेख जो 'Young India' तथा "Harijan" नामक पत्रिका में प्रकाशित हुए थे। गाँधी जी के आर्थिक विचारों का स्पष्ट विवरण डां0 कुमारप्पा की पुस्तकों से प्राप्त होता है। इनमें से मुख्य "The Economic of Pernanence', The Unitary Basis for Non

violent Democracy", 'why the village movement?," Gandhian Economic Thought "The Gandhian way of life" और 'The Gandhian Economy' है। इन पुस्तकों के अतिरिक्त एन0 के बोस लिखित "Studies in Gandhism," डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की 'constructive Programme-Some suggestions' जे0 जे0 अंजारिया की 'An Essay on Gandhism', आर0 बी0 ग्रैण की पुस्तक "Economics of Khaddar", मानुर एवं माथुर की "Economic though of Mahatma Gandhi" और डा0 राम मनोहर लोहिया की "Marx, 'Gandhi and Socialism' से भी गाँधी जी के विचारों का पता चलता है।

महात्मा गाँधी जी के आर्थिक विचार -

महात्मा गाँधी जी के आर्थिक विचार उनकी रचनाओं तथा उनके भाषणों में इधर-उधर बिखरे हुए मिलते है। वे अर्थशास्त्र को जीवन का एक अंग समझते थे इसलिए उनके आर्थिक विचार ही उनके सामान्य जीवन दर्शन का ही एक भाग है। प्रो0 वकील ने उचित ही कहा है कि गाँधी जी के आर्थिक विचार चार मूल सिद्वान्तों पर आधारित थे : सत्य, अहिंसा, श्रम की महानता और सरलता। गाँधी जी का सामाजिक और राजनैतिक जीवन ही इन सिद्वान्तों पर आधारित था।

गाँधी जी के जीवन में सबसे अधिक महत्व "सरल जीवन तथा उच्च विचार" सम्बन्धी सिद्वान्त का रहा है। इस सिद्वान्त में हिन्दू धर्म तथा हिन्दू दर्शन का सार निहित है। गाँधी जी ने इस सिद्वान्त को राष्ट्र हित में अपनाया। उन्होनें कहा कि सुख और सन्तुष्टि दो मानसिक परिस्थितियां है और आवश्यकताओं की वृद्वि की कोई सीमा नहीं है। गाँधी जी के अनुसार मस्तिष्क एक व्याकुल पक्षी है जितना अधिक इसे मिलता है। उतना अधिक यह चाहता है और फिर भी यह असन्तुष्ट रहता है। सुख एक मानसिक स्थिति है। एक महान अंग्रेज लेखक ने कहा है समाजवाद आर्दशों के उसी होत्र में आते है जैसे अर्जित पूंजीवाद। गाँधी जी ने कहा कि अनन्त सुख प्राप्त करने का एक मात्र साधन सरल जीवन है। सरलता में अटुट विश्वास के कारण ही उन्होनें अर्थ व्यवस्था में विकेन्द्रीकरण का पक्ष लिया था।

गाँधी जी अहिंसा के पुजारी थे। इसलिए उनके आर्थिक विचारों को "अहिंसा का अर्थशास्त्र" कहते है। उनका विश्वास था कि हिंसा चाहे किसी भी रूप में हो शान्ति स्थापित नहीं कर सकती क्योंकि वह अपने से बड़ी हिंसा को जन्म देती है। भारतीय समस्याओं का मुख्य समाधान इसी में है। कि मौलिक समस्याओं की ओर अहिंसात्मक दृष्टि से देखा जाए। गाँधी जी आधुनिक पूँजीवाद के विरूद्व ने क्योंकि यह मानव श्रम के शोषण पर आधारित था जिससे गाँधी जी हिसांत्मक समझते थे। वे मशीनों के उपयोग के पक्ष में नहीं थे क्योंकि उनसे बेकारी उत्पन्न होती है। गाँधी जी को श्रम की महानता में पूरा विश्वास था अर्थात् उनका कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक श्रम करके जीविका प्राप्त करनी चाहिए। यह गाँधी जी की आर्थिक विचार धारा का प्रमुख स्तम्भ है। वे अधिक अवकाश प्रदान करने के पक्ष में नहीं थे। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को 8 घन्टें काम करना चाहिए, 8 घन्टें फुरसत में रहना चाहिए तथा 8 घन्टें सोना चाहिए। फुरसत के 8 घन्टों में उसने किसी न किसी प्रकार का सामाजिक एक एवं सांस्कृतिक काम करना चाहिए।

गाँधी जी के विचारों में आध्यात्मिक एवं नैतिक मान्यताओं का एक प्रमुख स्थान है। उनके जीवन में भौतिकवाद का कोई महत्व नहीं था। उन्होनें कहा था कि साधन एक बीज है और उद्देश्य एक वृक्ष के समान है और दोनों में ऐसा ही अटूट सम्बन्ध है जैसा बीज और वृक्ष में है। गाँधी जी ने आर्थिक क्षेत्र व्यक्तियों एवं सस्थानों के पथ पदर्शन के लिए कुछ मौलिक सिद्वान्त प्रतिपादित किये थे। जो इस प्रकार हैं।

1. गाँधी जी अपरिग्रह तथा निस्वार्थ एवं विभिन्न प्रकार की असमानताओं के विध्वंस के पक्षपाती थे। उनके अनुसार यदि किसी व्यक्ति को उत्तराधिकार में बड़ी सम्पति प्राप्त हुई है या किसी ने व्यापार एवं उद्योग के लाभ से बड़ी मात्रा में धन कमाया है तो सम्पूर्ण सम्पति उसकी नहीं बल्कि सारे समाज की है। उन्होनें पूंजीपति की तुलना एक चोर से की है। किन्तु वह शक्ति द्वारा धनी व्यक्तियों के विध्वंस के पक्ष में नहीं थे। क्योंकि उनका विश्वास था समाज में धनी व्यक्तियों का भी महत्व है। उनका वास्तविक उद्देश्य पूंजीपतियों को सुधारना था। वे चाहते थे कि पूंजीपति धन के संचय के दोषों को समझे और स्वयं उतना ही प्राप्त करे जो उसकी सेवाओं के लिए उपयुक्त है। उनका कर्तव्य केवल यह नहीं कि वे अपनी ही देखभाल करे वरना उनकों दूसरों की भी देखभाल करनी चाहिए। गाँधी जी के अपरिग्रह मन्त्र के निम्न उद्देश्य थे।
   (i) जाथेदारी (Trustee) एक साधन है जिसकी सहायता से वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था पर आधारित समाज को समता-पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में बदला जा सकता है यह इस विश्वास पर आधारित है कि मानव स्वभाव को सदैव ही सुधारा जा सकता है।
2. यह सिद्वान्त किसी भी प्रकार की सम्पति के निजी स्वामीत्व को मान्यता नहीं देता केवल उसी समय तक स्वामीत्व का अधिकार प्रदान किया जायेगा जिस सीमा तक समाज सबके कल्याण को देखते हुए स्वामीत्व की स्वीकृति देगा।
3. यह सिद्वान्त धन के उपयोग एवं स्वामित्व के वैज्ञानिक नियम की अवहेलना नहीं करता।
4. राज्य द्वारा नियन्त्रित जाथेदारी (Trustee) में किसी भी व्यक्ति को अपने स्वार्थ में धन का उपयोग करने की स्वतन्त्रता नहीं होती।
5. यह सिद्वान्त प्रत्येक व्यक्ति के लिए कार्य करना आवश्यक मानता है।
6. उत्पादन का स्वभाव व्यक्तिगत लाभ एवं विचारों से निश्चित न होकर सामाजिक आवश्यकता से निर्धारित होगा।

औद्योगीकरण -

गाँधी जी बड़े पैमाने पर औद्योगिकरण के कट्टर विरोधी थे। वे समझते थे कि बड़ी मात्रा के उत्पादन से ही सामाजिक एवं आर्थिक दोष उत्पन्न हुए है। मनुष्य के मस्तिष्क शरीर और चरित्र के पूर्ण विकाश के लिए आवश्यक है कि व्यक्तिगत शक्तियों के संचालन की पूरी स्वतन्त्रता है उनका विश्वास था कि मशीनों के प्रयोग से मनुष्य आलसी बन जाता है उसको अपने परिश्रम में कोई रूचि नहीं रहती। वे औद्योगिक अर्थव्यवस्था के विरूद्ध इसी कारण से थे कि मिल उद्योग तथा यन्त्रों के उपयोग से हिंसा का विस्तार होता है भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले तथा गरीब देश के लिए मशीनों का उपयोग लाभप्रद नहीं होगा। एक बार उन्होनें स्वयं ही कहा था कि वह मशीनों के विरूद्ध नहीं क्योंकि वह जानते थे कि मनुष्य का शरीर और चरखा भी मशीन है। इस दृष्टि से दातों को कुरेदने की तीली भी एक मशीन है गाँधी जी केवल उसी मशीन के विरूद्ध थे जिसके उपयोग से परिश्रम को बचाने की चेष्टा की जाती है। परिश्रम न करने से शरीर कामचोर बन जाता है और अन्त में बेरोजगार की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

इस प्रकार गाँधी जी भारत के कपड़े के कुटीर उद्योग के नष्ट होने के विरूद्ध थे क्योंकि उनका विश्वास था कि इस उद्योग के कारण हजारों परिवारों को आबाद किया जा सकता है। खादी योजना ही उनका धर्म था गाँधी जी की योजना में ये कार्यक्रम सम्मिलित क्षेत्रों निम्नलिखित है :

(i) सभी प्राइमरी तथा सरकारी स्कूलों में कताई की शिक्षा देना अनिवार्य हो।

(ii) ज्यादा से ज्यादा मात्रा में कपास की खेती करना

(iii) स्रकारी समीतियों द्वारा कपड़े की बुनाई की व्यवस्था करना

(iv) सहकारी तथा शिक्षा के विभाग में, नगरपालिकाओं में, जिला बोंडो सम्बन्धी सभी कर्मचारियों को सूत कताई में उर्त्तीण होना अनिवार्य हो। मील द्वारा बनाये गये सुत से तथा हथकरघे पर बने हुए कपड़े के मूल्यों को नियंत्रित करना। जिस क्षेत्र में हाथ से बुना हुआ कपड़ा ज्यादा मात्रा में है उस क्षेत्र में मील के कपड़े पर रोक लगा दी जाए। सभी सरकारी विभागों में हाथ से बने हुए कपड़े का उपयोग किया जाए पुराने कपड़े के मीलों के विस्तार को रोक दिया जाए और नये कारखानों को स्थापित न किया जाए। विदेशी सुत अथवा कपड़े के आयात पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाए।

विकेन्द्रीकरण :

गाँधी जी के जीवन का मूल सिद्वान्त अहिंसा का सिद्वान्त था इसलिए वे ऐसे कार्यो के विरूद्ध थे जो हिंसा से आधारित होता था। उन्होनें विकेन्द्रीत वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया। समाज का सम्पूर्ण ढांचा अहिंसा पर आधारित था। उपभोग एवं वितरण के साथ-2 ही उत्पादन होता था और उसमें मौद्रिक अर्थ-व्यवस्था का कुचक्र भी नहीं था उत्पादन विदेशी बाजारों के लिए न होकर तुरन्त उपयोग के लिए किया जाता था। उनके अनुसार यह भारत की अर्थव्यवस्था के पुर्ननिर्माण के लिए सबसे उत्तम विधि होगी। इसलिए गाँधी जी का विचार था कि भारी उद्योगों का केन्द्रीकरण इस प्रकार होना चाहिए कि कुटीर उद्योगों को हानि न पहुँचे और वह राष्ट्रीय कार्यकलापों का बहुत थोड़ा अंश बना रहे।

ग्रामीण सर्वोदय -

ग्रामीण सर्वोदय गाँधी जी का महान आदर्श था। गाँधी जी चाहते थे कि प्रत्येक ग्राम स्वावलम्बी बने। ग्रामीण सर्वोदय से उनका अर्थ एक आदर्श ग्राम से था जिसमें निम्न बातों का होना आवश्यक था।

(1) ग्राम का ढ़ांचा व्यवस्थिति होना चाहिए।

(2) वहाँ पर फलों के पेड़ होने चाहिए।

(3) एक धर्मशाला और एक छोटा अस्पताल होना चाहिए।

(4) हर गांव भोजन तथा कपड़े में स्वावलम्बी होना चाहिए।

(5) सड़कों और गलियों को स्वच्छ रखना चाहिए।

(6) पूजा घरों को स्वच्छ तथा सुन्दर होना चाहिए।

(7) हर गली में पानी की निकासी का प्रबन्ध होना चाहिए।

(8) ग्रामों में डाकुओं तथा जंगली पशुओं से सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध होना चाहिए।

(9) एक सार्वजनिक भवन, स्कूल तथा एक बड़ा कमरा होना चाहिए।

(10) पानी की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।

(11) यदि भूमि अधिक है तो अफीम, तम्बाकू जैसी व्यापारिक फसलें की जाएं।

(12) ग्रामीण प्रशासन एवं व्यवस्था पंचायतों द्वारा की जाए।

(13) ग्रामीण पंचायतों को न्यायिक कार्यकारी एवं विधान सम्बन्धी अधिकार होने चाहिए।

(14) जाति प्रथा का अन्त होना चाहिए।

(15) प्रत्येक ग्राम में देखभाल करने वालों का एक दल होना चाहिए।

उनका विश्वास था कि यदि भारत में सभी ग्रामों की व्यवस्था इस प्रकार से की जायेगी तो भारत के लिए कोई भी चिन्ता नहीं रहेगी।

खाद्य समस्या –

सन् 1943-44 में गाँधी जी ने अपने जीवन का सबसे भीषण अकाल देखा था इस वर्ष अनाज की कमी के कारण बंगाल को काफी हानि हुई थी उन्होनें खाद्य समस्या को सुलझाने के लिए निम्न उपाय बताए।

(1) प्रत्येक व्यक्ति को अनाज का उपभोग कम से कम करना चाहिए।

(2) प्रत्येक बाग को खेतों में परिणत किया जाए।

(3) अनाज की चोर बाजारी को रोका जाए।

(4) सिचाई सुविधाए प्रदान करने के लिए सरकार को गहरे कुएं खुदवाने चाहिए।

(5) तिलहन, खल इत्यादि के निर्यात पर रोक लगा दी जाए। गाँधी जी खाद्य नियन्त्रण के विरूद्ध थे क्यों उनका विचार था कि इससे बनावटी कमी उत्पन्न हो जाती है और व्यक्ति दूसरों पर निर्भर हो जाता है।

जनसंख्या –

जनसंख्या सम्बन्धी समस्या के विषय में वह उन लोगों से सहमत नहीं थे जो जनसंख्या निरोधक उपायों के पक्ष में थे। उनका विचार था कि भारत में इनके उपयोग से तरफ मध्यम वर्गके पुरूष दुर्बल हो जायेगें तथा दूसरी ओर प्रजनन शक्ति का दुरूपयोग होगा। गाँधी जी ब्रह्मचार्य एवं संयम द्वारा सन्तति निरोध के पक्ष में थे। इसलिए उनका कहना था। कि सेक्स सम्बन्धी शिक्षा का प्रसार किया जाए जिसका उद्देश्य काम भावना पर विजय प्राप्त करना हो। गाँधी जी का विचार था सन्तान उत्पति का दायित्व स्त्रियों की उपेक्षा पुरूषों पर अधिक होता है।

मद्य निषेध –

गाँधी जी के अनुसार कॉफी, चाय, तम्बाकू और मदिरा का उपभोग व्यक्ति के मानसिक शारिरीक एवं नैतिक विकास के लिए हानिकारक होता है। वह मदिरापान को एक प्रकार का रोग समझते थे। परन्तु डा0 की सलाह पर मदिरापान के विरूद्ध नहीं थे। हजारों शराबियों को अपने बीच देखने की अपेक्षा उन्हे भारत को एक निर्धन देश देखना अधिक रूचिकर था। एक लेख (Young India) में लिखा था कि यदि उन्हे एक घन्टे के लिए भारत का डिक्टेटर नियुक्त कर दिया जाए तो सबसे पहले वह बिना मुहावजा दिये मदिरा की सभी दुकानों को बन्द करवा देगें तथा मील-मालिकों को, कर्मचारियों के लिए बिना हानि वाले पेय-पदार्थों को खुलवाने की मदद करके जलपान गृह खुलवाने की व्यवस्था स्थापित करने के लिए विवश करेगें।

गाँधी जी का समाजवाद –

गाँधी जी न तो पूंजीवाद के पक्ष में थे और न समाजवाद के। गाँधीवाद और समाजवाद में बहुत अन्तर है। गाँधीवाद मनुष्यों को महत्व प्रदान करता है जबकि समाजवाद तथा साम्यवाद में भौतिक सम्पन्न्ता का प्रमुख स्थान है। समाजवाद के अनुसार मनुष्य राज्य के लिए जीविता रहते है किन्तु गाँधीवाद राज्य को जनकल्याण का एक अस्त्र मानता है। गाँधीवादी प्रणाली इस प्रकार, नैतिक एवं आध्यात्मिक बातों सच्चाई एवं अहिंसा, विचारों की स्वतन्त्रता तथा व्यक्तित्व के विकास पर आधारित है। गाँधी जी एक ऐसी ही व्यवस्था चाहते थे। भारत में प्रजातन्त्र का भविष्य तभी सिद्व हो सकता जब उद्योग की छोटी-छोटी इकाईयाँ स्थापित की जाए। इससे न केवल हमारी आर्थिक दशा ही उन्नत होगी अपितु देश भी सुरक्षित रहेगा।

सन्दर्भ सूची :

1. M.K. Gandhi : Hind Swaraj, pp, 66-69
2. J.B. Kripalani : Gandhian Thought, p, 8
3. M.K. Gandhi : Economics and Industrial Life and Relations Vol. 1, p. 161
4. The Harijan, April 13, 1938
5. M.K. Gandhi : Sarvodaya, pp. 50-51
6. M.K. Gandhi : The Economics of Khadhi, p. 7
7. Towards Non-Voilent Socialism, p. 29
8. The Harijan, November 2, 1934
9. M.K. Gandhi : India of My Dreams, p. 102
10. Young India, September 15, 1927
11. M.K. Gandhi : India of My Dreams, p. 163